

Written by B4M  
Friday, 11 March 2011 08:29

---

: □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ '□□□□' □□□□ □□. □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर केके अग्रवाल ने माना है कि मेडिकल के क्षेत्र के बदनाम करने के पीछे सबसे बड़ा हाथ दवा कंपनियों का है। इन्हीं दवा कंपनियों की राजनीति डॉक्टरी पेशे के भी बदनाम कर रही है। ये कंपनियां अपने प्रोडक्ट को प्रेस्क्राइब करने के लिए डॉक्टरों को मोटा लालच देती हैं। देश में सपेक्ष केट पहने कई ऐसे कले दलाल अरबों की संपत्ति लालि बैसे हैं।

न्यूज चैनल न्यूज □क्सप्रेस के मंथन कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ. केके अग्रवाल ने बेबाकी से कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में भी उतनी ही सधियासत हावी है, जतिनी राजनीतिक पार्टियों में। इस क्षेत्र में राजनीति, सत्ता और पैसे पर कब्जे की है। डॉक्टरों के मलिनने वाले पुरस्कारों पर राजनीतिके बारे में पूछे गे सवाल के जवाब में वे कहते हैं कि पद्मश्री जैसे अवार्ड जुगत से नहीं मलिते, पर वीवीआईपी का इलाज करने वाले डॉक्टर को पुरस्कार मलि ही जाता है। वीआईपी देश के सर्वश्रेष्ठ डॉक्टरों को अपने इलाज के लिए चुनते हैं। इसलिये ऐसे डॉक्टर की कबलियित पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिये।



चिकित्सा में फैले भ्रष्टाचार के बारे में उन्होंने कहा कि दूसरे पेशे की तरह यहां भी भ्रष्टाचार हावी है। बावजूद इसके नब्बे फीसदी डॉक्टर स चाहते हैं कि लोगों को बेहतर इलाज मलिते। महज कुछ डॉक्टरों की करगुजारियों की वजह से पूरे चिकित्सा क्षेत्र को बदनाम करना ठीक नहीं है। अगर देश की सरकार हर नागरिक को सवासुथ्य बीमा करा दे तो चिकित्सा क्षेत्र का भ्रष्टाचार खुद ब खुद मटि जा गे। हर भारतीय नागरिक को कलाख का बीमा कराने में सरकार के सरिफ़ कलाख करोड़ रुपये खर्च करने होंगे, जो स्पेक्टरम घोटाले से काफी कम रकम है। उन्होंने मीडिया खासकर टीवी न्यूज चैनलों को नसीहत दी कि वो डॉक्टरों के बारे में सही जानकरी देने के साथ-साथ संयमति भाषा का इस्तेमाल करें। इससे डॉक्टरों और मीडिया के बीच का समन्वय भी बनेगा।

पोलियो उन्मूलन अभियान के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा इस अभियान की सफलता के लिए लोगों को जागरूक करना जरूरी है, क्योंकि इस को नाकाम करने के पीछे भी कखास तरह की राजनीति हो रही है। चिकित्सा को कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन क्ट के दायरे में लाने का उन्होंने वरिध किया और कहा कि डॉक्टर न तो दुकानदार है और न ही मरीज कोई ग्राहक इसलिये इस क्ट का कोई मतलब नहीं है। इसके लिए स्टेट कंसलिल काफी है। डॉक्टर अग्रवाल चिकित्सा क्षेत्र में आरक्षण को ठीकमानते हैं बशरते इसकी मेरिट से कोई समझौता न हो। प्रेस वजिप्त